पाठ 16. कितनी बड़ी

कविता का उद्देश्य

प्रस्तुत कविता छोटे-से जीव मक्खी के बारे में है। छोटे-छोटे जीवों को संसार की इतनी विशालकाय वस्तुएँ न जाने कैसी-कैसी दिखलाई पड़ती होंगी। यह कविता संसार की भिन्न-भिन्न वस्तुओं को मक्खी की दृष्टि से देख रही है। इस पाठ का उद्देश्य बच्चों को मक्खी जैसे छोटे-से जीवों के दृष्टिकोण से अवगत कराना है।

कविता का सारांश

मक्खी एक छोटा-सा उड़ने वाला कीट है। कवि कल्पना कर रहे हैं कि जो वस्तुएँ हमें सामान्य-सी लगती हैं। वे सब मक्खी को कितनी बड़ी और किस तरह की लगती होंगी! एक कटोरा जल उसे सागर के जैसा लगता होगा। रोटी का एक टुकड़ा उसे पर्वत के समान लगता होगा। एक फूल गुलदस्ते जैसा तथा काँटा भाले के समान दिखलाई पड़ता होगा। कवि ने बालमन की भाँति रोचक कल्पना करके भिन्न-भिन्न वस्तुओं को मक्खी की नज़रों से देखकर प्रकट किया है।

अध्यापन संकेत

कविता का सस्वर वाचन करें। बच्चों से भी कविता की पंक्तियों का वाचन करवाएँ। बच्चों को मक्खी जैसे अन्य छोटे-छोटे जीवों के बारे में बताएँ। कविता में आए कठिन शब्दों का अर्थ स्पष्ट करते जाएँ।

- बच्चों को कविता में आए—सागर-सा, पर्वत-सी, भाला-सा आदि शब्दों के बारे में बताएँ कि इनका अर्थ होता है—सागर के जैसा, पर्वत के जैसा, भाले के जैसा आदि।
- कविता में आए संयुक्ताक्षरों—प्य, क्ख, स्त आदि को श्यामपट्ट पर लिखें तथा बच्चों से पूछते हुए उनसे बनने वाले शब्द लिखते जाएँ।
- बच्चों से पूछें—क्या उनके मन में भी इस तरह की कल्पनाएँ आती हैं अथवा वे किसी चीज़ के बारे में जानने की इच्छा रखते हैं। बच्चों को अभिव्यक्ति का भरपूर अवसर दें।

डिजीडिस्क (DigiDisc) के माध्यम से पाठ की ई-बुक विद्यार्थियों को दिखाकर पाठ के प्रत्येक अंग का स्पष्टीकरण कीजिए। गतिविधियों की दुनिया से परिचय भी कराइए।